पुलोमन् *m.* nom. pr. *Asuri.* A. 10. 7.

1. पुष् 1. 9. 10. *P.* पोषामि, पुष्णामि, पोषयामि. Nutrire. Bh. 15. 13.: पुष्णामिचौषधीः सर्वाः; Mah. 3. 1963.: सुतान् इव पुपोष तान्; 13639.: पुत्रान् नार्यः पुष्णन्ति; Hit. ed. Ser. p. 37.: किम् अहम् परपिण्डेनात्मानम् पोषयामि; H. 4. 50.: मांसैः पुष्टः. — *Caus.* nutriendum curare. Sak. 107. 7.: स्वम् अपत्यजातम् अन्यद्विजैः परभृताः पोषयन्ति.

c. परि 10. nutrire, sustentare. Bhar. 2. 38.: तस्मिंश्च (लोके) परिपोष्यमाणे.

c. सम् 9. augeri, crescere. Bhar. 2. 13.

2. पुष् 4. *P.* 1) nutrire. Bhatt. 17. 32.: देहम् इह ’पुष्यः सुरामिषैः. 2) frui, possidere. R. Schl. 94. 10.: श्रियम् पुष्यत्य् अयङ् गिरिः; Ragh. 16. 58.: वर्णम् पुष्यत्य् अनेकं सरयूप्रवाहः; 18. 31. 3) adipisci. Ragh. 3. 22.: दिने दिने पुपोष वृद्धिम् (Schol. लेभे).

पुष्कर *m.* 1) piscina, lacus. 2) lotus flos (Wils. Nelumbium speciosum *or* Nymphaea nelumbo). 3) n. pr. regis, fratris *Nali.*

पुष्कराक्ष (*BAH.* ex praec. et अक्ष oculus) loto similes oculos habens. H. 2. 19.

पुष्करिणी *f.* (a पुष्कर s. इन् in *fem.*, v. *euph. r.* 94a).) lotorum lacus, lacus *in universum.* A. 4. 50.

पुष्कल excellens, eximius. Su. 4. 4. Bh. 11. 21.

पुष्टि *f.* (r. पुष् s. ति) incrementum; prosperitas. Ragh. 18. 32.

पुष्प् 4. *P.* (ut videtur, Denom. a पुष्प) florere. V. पुष्पित.

पुष्प *m.* (ut videtur, a r. पुष्) flos.

पुष्पलिह् *m.* (nom. -लिट्, e पुष्प et लिह् lambens) apis. Am.

पुष्पवत् (a पुष्प s. वत्) 1) floribus praeditus. 2) *m. Du.* पुष्पवन्तौ sol et luna. Am.

पुष्पवती *f.* (*fem.* praec.) mulier menstrualis. Am.

पुष्पित (a पुष्प s. इत, v. gr. 652. et cf. कुसुमित Sa. 4. 26.) flores habens, floridus, florens. H. 1. 11. N. 12. 102. Sa. 4. 31. *trop.* Bh. 2. 42.

पुस्त् 10. *P.* (आदरानादरयोः *K.* बन्धे अनादृत्यादृत्योः *V.*) venerari; spernere; ligare. (Cf. पूज्, बस्त्.)

पुस्तक *n.* (r. पुस्त् s. अक) liber, codex.

पू 9. *P. A.* et 1. *A.* पुनामि, पुने (gr. 385.), पवे. Purificare, lustrare. R. Schl. prooem. 3.: पुनाति भुवनम् पुण्या रामायणमहानदी; Mah. 3. 6030.; Man. 11. 248.: भ्रूणहणम्... पुनन्ति; Mah. 3. 7081.: कुलम् पुनीते; Bhatt. 6. 61.: पवसे हविः; 1. *P.* Bh. 10. 31.: पवनः पवताम् अस्मि. — *Pass.* Man. 2. 62.: हृद्गाभिः (अद्भिः) पूयते विप्रः. पूत lustratus. Bh. 4. 10. 9. 10. *Caus.* facere ut *alqs* lustretur, lustrare. Mah. 5. 414.: पावयिष्यामि वज्रिणाम्. (Cf. lat. *pû-rus, pu-tare*; lith. *pûs-tas* desertus, vastus (e *put-tas*? v. gr. comp. 102.), *pus-tau* acuo, v. तिज्, तेजस्; germ. vet. *bar* purus, nudus, inanis fortasse a *Caus.* पावयामि mutato *v* in *r* sicut in *birumês* sumus = भवामस्, gr. comp. 20. V. पावक, पवित्र.)

c. परि *i. q. simpl.* Man. 8. 330. 331.

c. वि *id.* Mah. 2. 1150.

पूग *m.* acervus, multitudo, turba. A. 3. 32. (Cf. idem valentia पुङ्ग *m. n.*, पुञ्ज *m.*)

पूज् 10. *P. interdum A.* honorare, colere, venerari. H. 4. 57.: अपूजयन् नरव्याघ्रम्; Su. 4. 21.: पूजयिष्यंस् तिलोत्तमाम्; N. 2. 14.: सुपूजितौ; 13. 22.; Mah. 1. 4117.: अपूजयन्त वाग्भिर् नरव्याघ्रम्; Hit. 71. 13.: बध्नीयात् पूजयेत वा — पूजित ornatus. H. 1. 31.: कुन्तीं सर्वलक्षणपूजिताम्.

c. अभि *i. q. simpl.* N. 3. 16.: मनोभिस् त्व् अभ्यपूजयन्. R. Schl. II. 76. 12.: तथे ’ति वाक्यन् तस्या ’भिपूज्य.

c. प्रति *id.* Man. 1. 1.: प्रतिपूज्य यथान्यायम् (मनुम्); R. Schl. I. 26. 4.: तान् ऋषीन् प्रतिपूज्य; I. 11. 10.: साधु इति तद्वाक्यम् प्रत्यपूजयन्.

c. सम् *id.* In. 2. 10. 3. 3. 5. 47.

पूजा *f.* (r. पूज् s. आ) honor, reverentia, veneratio, cultus. N. 21. 20. In. 5. 19.

पूण् 10. *P.* (सङ्घाते) coacervare. (Cf. पूर्ण plenus, unde पूण् ortum esse videtur ejecto र्.)